International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 1249-1255

उच्च माध्यमिक स्तर की विभिन्न वर्गो की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति एवं विद्यालय सन्तुष्टि का अध्ययन

डॉ. गीता दहिया
प्रधानाचार्य, नेशनल टी. टी. कॉलेज फॉर गर्ल्स, अलवर, राजस्थान, भारत।

सारांश
शिक्षा विकास का आधार स्तंभ होती हैं, इसलिए प्रत्येक वर्ग को शिक्षा के समान अवसर सुलभ होने चाहिये जिससे सभी की सक्रिय भागीदारी समाज एवं राष्ट्र के विकास में एक नागरिक के रूप में सुनिश्चत हो सके। शिक्षा के अधिकार अधिनियम (2009) में भी शिक्षा के सार्वभौमिकरण की आवश्यकता को महसूस करते हुये प्रत्येक वर्ग को शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराने पर बल दिया गया, परंतु वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य पर दृष्टिपात करें तो यह पता चलता है कि विद्यालयी शिक्षा का लाभ अभी प्रत्येक वर्ग के बच्चों को पूर्णरूप से नहीं मिल पाया हैं। विशेष कर बालिकाओं को यद्पि अनसूचित जाति व जनजाति की शिक्षा के लिए विभिन्न सरकारी योजनाओं को भी लागू किया गया हैं, परंतु व्यावहारिक रूप में इसका क्रियान्वयन अभी भी पूर्णरूप से नहीं हो सका हैं। यही कारण है कि इस दिशा में अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हो सके हैं। शिक्षा को जब हम बालक के सर्वागीण विकास से जोड़ते है तो शिक्षा से मूल्य निर्माण की अपेक्षा और बढ़ जाती हैं। कोई भी समाज या राष्ट्र मूल्यों से अलग होकर भौतिक संसाधन का विकास भले ही कर ले लेकिन वह एक सभ्य समाज के दायरे से बाहर हो जाता है इसलिए मूल्य आधारित शिक्षा की उचित व्यवस्था हो। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में विभिन्न वर्गो की बालिका की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति व विद्यालय सन्तुष्टि को जानकर उनकी भावी आवश्यकताओं तथा इनकी शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन हेतु कुछ महत्त्वपूर्ण सुझावों को उल्लिखित किया गया हैं, जिससे उनकी शिक्षा की स्थिति को सर्वव्यापी एवं बेहतर बनाने के लिये सार्थक प्रयास किये जा सकें।

मूल शब्द : आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता, शिक्षा, सरकारी योजनाओं।

प्रस्तावना
सर्वविदित तथ्य है कि किशोरावस्था संघर्ष, तूफान एवं परिवर्तनी काल है। इस आयु वर्ग के बालक–बालिकाओं का मनोविज्ञान अर्थात व्यवहार का अध्ययन सदैव से ही शिक्षा जगत के लिए अनिवार्य तत्व रहा है। सामान्य तौर पर यह आयुकाल एक समस्यात्मक काल होता है। इस काल में समस्याओं के साथ–साथ बालिकाओं का व्यक्तित्व भी विकसित होता है। अतः शैक्षिक आयोजन के निर्धारण में बालिकाओं के व्यवहार का अध्ययन तथा उसके परिणाम भावी शिक्षा के दिशा निर्देशक होते है।

यद्यपि हम इस दिशा में विकास की ओर अग्रसर है लेकिन आज भी हमारी बालिकाओं में असमानता (लिंग भेद) दोयम दर्जे के पारिवारिक व्यवहार के कारण तथा पुरूष प्रधान समाज के कारण उनमें आत्मविश्वास की कमी, हीन भावना, पहलपन का अभाव, पराश्रित व्यवहार, काल्पनिक भय, कुण्ठा, दब्बुपन जैसी अनेक मनोवैज्ञानिक समस्याएँ सामाजिक व्यवहार स्वरूप स्वतः विकसित हो जाती हैं। इस कारण उनका नैसर्गिक व्यक्तित्व विकसित नहीं हो पाता।

भारतीय परिदृश्य में महिला शिक्षा का स्वरूप अत्यधिक पिछडा हुआ है तथा शिक्षित महिलाओं में भी अनेक व्यवहारिक समस्याएं निहित है। हाल ही एज्यूकेशनल इन्स्टीटयूट और विप्रो ने संयुक्त रूप से भारत के पॉच शहरों के 142 स्कूलों के 32,000 छात्रों पर सर्वे किया तथा यह पाया कि अभिभावक लडकियों की तुलना में लडकों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दे रहे है। इस निमित्त छात्राओं का मनोविज्ञान की दृष्टि से शैक्षिक आयोजन करना आवश्यकता आधारित कार्यक्रम है।

आधुनिक युग में महिला शिक्षा के सन्दर्भ राजनीतिक एवं सामाजिक कल्याण से जुड कर विकास का मुद्दा बन गये है। इस निमित्त आज का उत्तरदायी समाज बालिका शिक्षा के संदर्भो की दृष्टि से काफी चिन्तित व प्रयासनीय स्वरूप में दिखायी देता है। प्रायः हम देखते है कि इस आयु वर्ग की बालिकाओं से आज्ञाकारिता की अपेक्षा अधिक की जाती हैं एवं उनकी आकांक्षाओं व सन्तुष्टि का विशेषतः भारतीय समाज में कम ध्यान रखा जाता हैं। इस निमित हाथ कंगन को आरसी क्या क्योंकि हम जानते है कि विश्व में महिला उत्पीडन की दृष्टि के मामलों में भारत का स्थान उच्चस्थ है। इसलिए राष्ट्रीय दूरदर्शन पर प्रतिदिन महिलाओं को उत्पीडन के खिलाफ जागरूक होने के लिए आह्वानित किया जाता है। ऐसे में बर्बस ही यह प्रश्न उठ खड़ा होगा कि भारतीय किशोरियों की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति तथा जिस विद्यालय में वह पढ़ रही है उसको लेकर वह सन्तुष्ट है या नहीं को चावल के मुट्ठी भर दानों के समान अध्ययन कर समस्या के व्यापक स्वरूप का भान किया जायेगा। क्या बालिकाएँ अपने विद्यालयी उपागमों से सन्तुष्ट है या नहीं? बालिकाओं से समाज आज्ञाकारिता की अपेक्षा रखता है इस पृष्ठभूमि में भी यह उत्कुण्ठा उठ खड़ी होती है कि भारतीय समाज से सन्दर्भित बालिकाओं में आज्ञाकारिता की प्रवृति में अन्तर है। इन सभी अनसुलझे प्रश्नों की तलाश में शोधकर्त्री ने उक्त शीर्षक ''उच्च माध्यमिक स्तर की विभिन्न वर्गो की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति एवं विद्यालय सन्तुष्टि का अध्ययन'' अनेक सन्दर्भो के पुनर्रावलोकन के बाद में रेखांकित किया गया। इन संदर्भो के पुनरावलोकन की पृष्ठभूमि में उक्त शोध प्रश्न, प्रश्नो पर आधारित एवं निर्धारित शोध शीर्षक बालिका शिक्षा

की ज्ञान की रिक्तता को पूर्ण करता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्वः

सदियों से वर्ण व्यवस्था तथा जातिगत आधार पर शोषित पीडित तथा दलित वर्गो को स्वतन्त्रता के पश्चात जो गरिमा एवं सम्मानित स्थान भारतीय समाज एवं राजनीति से प्राप्त हुआ है वह प्रत्येक दृष्टि से भारतीय समाज की सर्वाधिक उल्लेखनीय उपलब्धि कही जायेगी । आरक्षण व्यवस्था एवं सामाजिक व प्रशासनिक सम्बलन के चलते पिछडे वर्गो को राष्ट्र की मुख्य धारा में सम्मिलित किया गया है इतने सारे संस्थानिक एवं प्रशासनिक प्रयासों के बावजूद भी लिंग, वर्ण एवं जातिगत आधारों के विकास के सन्दर्भ आज भी भारत में न्यायोचित नहीं है। जातिगत भेदभाव के साथ–साथ लडके लडकी का भेद (लिंग भेद) भारत के जनमानस में पुरजोर रूप से व्याप्त है। ग्रामीण समाज व शैक्षिक पिछडेपन के शिकार समाज की इस सन्दर्भ में स्थिति काफी सोचनीय है। अतः बालिका शिक्षा और उसके सन्दर्भो का अध्ययन करना राष्ट्रीय महत्व के कार्यो का पर्किया है।

अतः बालिका शिक्षा में विद्यालय संतुष्टि का अध्ययन न केवल उनकों निज तौर पर विकसित करेगा। बल्कि समाज को आवश्यकता आधारित जागरूक बालिकॉए प्रदान करेगा। इससे भावी महिला विकास आयोजना सुदृढ होगी। अतः बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि का अध्ययन एक विज्ञान परक व आवश्यकता आधारित समाजोपयोगी कृत है। जिसके निष्कर्ष महिला शिक्षा की भावी अवधारणाओं को देखते है। यह अध्ययन वर्तमान समय में ना केवल प्रांसगिक है। बल्कि बालिकाओं के व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास हेतु अति आवश्यक भी है। इसके माध्यम से बालिकाओं को उनकी प्रकृति के अनुसार समझा जा सकता है फिर उन्हें उनकी प्रवृति के अनुसार ही दिशा–निर्देशित किया जा सकेगा। उसमें आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति किस सीमा तक है उसकी विद्यालय संतुष्टि कैसी है ? यदि शिक्षक को व अभिभावकों को यह स्पष्ट हो जाए तो बालिकाओं को समाज के लिए सुयोग्य बनाना कठिन ना होगा।

भौगोलिक दृष्टि से सुदूर एवं दुर्गम अंचलों में निवास करने वाली अनुसूचित जनजाति व अनुसूचित जाति का एक बड़ा भाग आज भी शिक्षा रूपी उस प्रकाश से वंचित है जो उनके जीवन को उन्नयन की दिशा की और ले जा सके। अतः शैक्षिक विकास की दृष्टि से आज पुनः इस दिशा में वैचारिक विमर्श एवं शोधपरक दृष्टि की आवश्यकता है, जिससे इस वर्ग की स्थिति को समझते हुए उनकी भावी आवश्यकताओं और संभावनाओं के लिये सार्थक प्रयास किये जा सकें।श

समस्या कथन

''उच्च माध्यमिक स्तर की विभिन्न वर्गो की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति एवं विद्यालय सन्तुष्टि का अध्ययन।''

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्याः

- **अनुसूचित जातिः**

एनसाईक्लोपिडिया ऑफ सोशियोलॉजी के अनुसार ''भारत में अस्पृश्य जातियों को अनेक नामों से संबोधित किया गया है यथा अछूत, अंत्यज, दलित वर्ग, बाह्य जातियॉ, हरिजन आदि। सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से कमजोर जातियों के उत्थान तथा उन्हें कुछ विशेष सुविधाएं देने के लिए सन् 1935 के विधान में ऐसी जातियों की एक सूची तैयार की गई । इस सूची में सम्मिलित सभी जातियों को बाद में ''अनुसूचित जाति'' कहा जाने लगा।''

- **अनुसूचित जनजाति**

डां. मजूमदार ''एक जनजाति परिवारों या परिवारों के समूह का संकलन होता है जिसका एक सामान्य नाम होता है, जिसके सदस्य एक निश्चित भू–भाग में रहते है सामान्य भाषा बोलते है और विवाह, व्यवसाय या उद्योग के विषय में निश्चित निषेधात्मक नियमों का पालन करते है और पारस्परिक कर्तव्यों की एक सुविकसित व्यवस्था को मानते है।

- **आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृतिः**

ऑक्सफोर्ड एडवांस लर्नर शब्दकोश के अनुसार– ''आज्ञाकारिता वह व्यवहार है जैसा हम अपने बच्चों से करवाना चाहते है हमारी इच्छा के प्रतिकूल अनुयायी का व्यवहार अवज्ञाकारिता की श्रेणी में आता है। इन दोनों व्यवहारों में से किसी एक का चयन व अनुगमन आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता की प्रवृति कहलायेगी।

- **विद्यालय सन्तुष्टि**

ऑक्सफोर्ड शब्द कोश के अनुसार ''स्कूल एक ऐसा सामाजिक प्रतिनिधित्व वाला संस्थान है जहा समाज की आवश्यकता आधारित ज्ञान, विचारों एवं प्रशिक्षणों को मानवीय संतुष्टि में औपचारिक रूप से स्थानांतरित किया जाता है। वही शब्द कोश में सन्तुष्टि से तात्पर्य उस खुशनुमा अहसास से लिया गया है जो हमें तब मिलता है जैसा हम चाहते है वैसा ही मिल जाये।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर की अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व सामान्य वर्ग की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति का अध्ययन करना।
   i) उच्च माध्यमिक स्तर की सामान्य एवं अनुसूचित जाति की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
   ii) उच्च माध्यमिक स्तर की अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
   iii) उच्च माध्यमिक स्तर की अनुसूचित जनजाति व सामान्य वर्ग की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर की अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व सामान्य वर्ग की बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि का अध्ययन करना।
   i) उच्च माध्यमिक स्तर की सामान्य एवं अनुसूचित जाति की बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
   ii) उच्च माध्यमिक स्तर की अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
   iii) उच्च माध्यमिक स्तर की अनुसूचित जनजाति व सामान्य वर्ग की बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3 उच्च माध्यमिक स्तर की अनुसूचित जाति की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति एवं विद्यालय संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्ध का अध्ययन करना।
4 उच्च माध्यमिक स्तर की अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की

आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति एवं विद्यालय संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्ध का अध्ययन करना।

5 उच्च माध्यमिक स्तर की सामान्य वर्ग की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति एवं विद्यालय संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. उच्च माध्यमिक स्तर की विभिन्न वर्गो की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति सामान्य स्तर की है।
   i) उच्च माध्यमिक स्तर की सामान्य व अनुसूचित जाति की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति में कोई सार्थक अन्तर नही है।
   ii) उच्च माध्यमिक स्तर की अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति में कोई सार्थक अन्तर नही है।
   iii) उच्च माध्यमिक स्तर की अनुसूचित जनजाति व सामान्य वर्ग की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर की विभिन्न वर्गो की बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि सामान्य स्तर की है।
   i) उच्च माध्यमिक स्तर की सामान्य व अनुसूचित जाति की बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
   ii) उच्च माध्यमिक स्तर की अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
   iii) उच्च माध्यमिक स्तर की अनुसूचित जनजाति व सामान्य वर्ग की बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर की अनुसूचित जाति की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति एवं विद्यालय सतुष्टि के मध्य परस्पर कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया जाता है।
4. उच्च माध्यमिक स्तर की अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति एवं विद्यालय सतुष्टि के मध्य परस्पर कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया जाता है।
5. उच्च माध्यमिक स्तर की सामान्य वर्ग की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति एवं विद्यालय सतुष्टि के मध्य परस्पर कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया जाता है।

सीमांकन– अनुसंधानकर्त्री ने अपने अध्ययन का क्षेत्र राजस्थान राज्य के बीकानेर एवं जयपुर संभाग तक सीमित रखा।

प्रस्तुत शोध में न्यायदर्श का चयन

शोध प्रबंधं को प्रस्तुत करने के लिए निशचित अवधि है इसके साथ ही अनुसंधान की कार्य क्षमता सीमित एवं लक्ष्य की एक निशचित परिधि हैं अतः इन सब बातो को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने बीकानेर एवं जयपुर संभाग की 900 बालिकाओं पर अध्ययन किया। शोधकर्ती ने न्यादर्श चयन हेतु स्वविवेक न्यादर्श प्रणाली में उद्देश्य पूर्ण एवं यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया।

क्र.स.	जिला	अनुसूचित जाति		अनुसूचित जनजाति		सामान्य वर्ग		योग
		ग्रामीण	शशहरी	ग्रामीण	शहरी	ग्रामीण	शहरी	
1	अलवर	25	25	25	25	25	25	150
2	जयपुर	25	25	25	25	25	25	150
3	दोसा	25	25	25	25	25	25	150
4	चुरू	25	25	25	25	25	25	150
5	बीकानेर	25	25	25	25	25	25	150
6	झून्झूनू	25	25	25	25	25	25	150
योग		150	150	150	150	150	150	900

शोध में प्रयुक्त उपकरण–

1. आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति मापनी (ODTS) डॉ. सी. एस महता व डॉ. एन हसन
2. शर्मा किशोर विद्यालय सन्तुष्टि मापनी परीक्षण (SSASI) डॉ. मिनाक्षी शर्मा

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

1. मध्यमान, प्रमाप विचलन
2. प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता
3. क्रान्तिक अनुपात

निर्वचन तथा कारकः– शोधकर्त्री ने प्रस्तुत अध्याय में विभिन्न वर्गो की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति एवं विद्यालय संतुष्टि को जानने का प्रयास किया है। न्यादर्श के रूप में दो संभागो से 900 बालिकाओं को चुना है। सभी वर्गो की बालिकाओं के स्तर को जानने हेतु प्राप्तांको का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना की गई। सभी वर्गो की बालिकाओं के प्राप्तांको का क्रान्तिक मूल्य ज्ञात कर 0.05 स्तर पर सार्थकता की जाचॅ की गई व विभिन्न वर्गो की बालिकाओं में दो चरो के मध्य परस्पर सम्बन्ध को देखने हेतु प्राप्तांको के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक की गणना की गई।

प्रदतो का विश्लेषणः

विभिन्न वर्गो की बालिकाओ की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति का स्तर ज्ञात करना

तालिका संख्या 1

विद्यार्थी	संख्या	प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
		उच्च	सामान्य	निम्न	उच्च	सामान्य	निम्न
अनुसूचित जाति	300	43.00	34.33	22.66	34.43 से 51.57	26.11 से 42.55	15.41 से 29.91
अनुसूचित जनजाति	300	42.33	32.00	25.66	33.78 से 50.88	23.93 से 40.07	18.1 से 33.22
सामान्य वर्ग	300	45.33	31.33	23.33	36.71 से 53.95	23.3 से 39.39	16.01 से 30.65

सारणी संख्या 1 के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर की अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति और सामान्य वर्ग की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता मापनी के प्राप्तांको का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना पृथक–पृथक की गई जिसके अनुसार सभी वर्गो की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता उच्च स्तर की पाई गई अतः उक्त संदर्भ में परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अनुसूचित जाति व सामान्य वर्ग की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति की तुलना करना

तालिका संख्या –2

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रमाप विचलन	संख्या	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
					0.01	0.05
अनुसूचित जाति	32.42	2.47	300	1.22	सार्थक नहीं है	सार्थक नहीं है
सामान्य वर्ग	32.64	2.13	300			

तालिका संख्या दो में अनुसूचित जाति व सामान्य वर्ग की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति की तुलना की गई हैं अनुसूचित जाति की बालिकाओं का मध्यमान 32.42 तथा सामान्य वर्ग की बालिकाओं का मध्यमान 32.64 है। मानक विचलन की गणना करने पर अनुसूचित जाति की बालिकाओं का मानक विचलन 2.47 हैं तथा सामान्य वर्ग की बालिकाओं का मानक विचलन 2.13 है। दोनो समूह की बालिकाओं का क्रान्तिक अनुपात मान 1.22 हैं जो कि दोनो सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं हैं अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं। इस स्तर पर दोनो वर्ग की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति में अन्तर नहीं हैं।

अनुसूचित जाति व जनजाति की बालिकाओं के समूह की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति की तुलना करना

तालिका सं 3

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रमाप विचलन	संख्या	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
					0.01	0.05
अनुसूचित जाति	32.42	2.47	300	5.90	सार्थक है	सार्थक है
अनुसूचित जनजाति	33.72	3.18	300			

तालिका संख्या 3 में अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति की तुलना की गई हैं अनुसूचित जाति की बालिकाओं का मध्यमान 32.42 तथा अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं का मध्यमान 33.72 है। मानक विचलन की गणना करने पर अनुसूचित जाति की बालिकाओं का मानक विचलन 2.47 हैं तथा अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं का मानक विचलन 3.18 है। दोनो समूह की बालिकाओं का क्रान्तिक अनुपात मान 5.90 हैं जो कि दोनो सार्थकता स्तर पर सार्थक हैं अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती हैं। इस स्तर पर दोनो वर्ग की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति में अन्तर हैं। अर्थात अनुसूचित जाति की बालिकाओं की तुलना में अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति अधिक है।

अनुसूचित जनजाति व सामान्य वर्ग की बालिकाओं के समूह की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति की तुलना करना

तालिका सं– 4

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रमाप विचलन	संख्या	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
					0.01	0.05
अनुसूचित जनजाति	33.72	3.18	300	5.14	सार्थक है	सार्थक है
सामान्य वर्ग	32.64	2.13	300			

तालिका संख्या 4 में अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति की तुलना की गई हैं अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं का मध्यमान 33.72 तथा सामान्य वर्ग की बालिकाओं का मध्यमान 32.64 है। मानक विचलन की गणना करने पर अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं का मानक विचलन 3.18 हैं तथा सामान्य वर्ग की बालिकाओं का मानक विचलन 2.13 है। दोनो समूह की बालिकाओं का क्रान्तिक अनुपात मान 5.14 हैं जो कि दोनो स्तर पर सार्थक हैं अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती हैं।

विभिन्न वर्गो की बालिकाओं की विद्यालय सन्तुष्टि के स्तर की गणना

तालिका सं– 5

विद्यार्थी	संख्या	प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
		उच्च	सामान्य	निम्न	उच्च	सामान्य	निम्न
अनुसूचित जाति	300	4.66	56.00	39.33	1.01 से 8.31	47.41 से 64.59	30.87 से 47.79
अनुसूचित जनजाति	300	9.33	60.66	30.00	4.30 से 14.36	52.20 से 69.2	22.07 से 37.93
सामान्य वर्ग	300	5.66	70.33	24.00	1.66 से 9.66	62.42 से 78.24	16.61 से 31.39

तलिका संख्या 5 के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर की अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति और सामान्य वर्ग की बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि के प्राप्तांको का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना पृथक–पृथक की गई जिसके अनुसार सभी वर्गो की बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि सामान्य स्तर की पायी गयी अतः उक्त संदर्भ में परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

अनुसूचित जाति व सामान्य वर्ग की बालिकाओं के विद्यालय संतुष्टि की तुलना करना

तालिका सं– 6

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रमाप विचलन	संख्या	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
					0.01	0.05
अनुसूचित जाति	137.63	19.75	300	4.56	सार्थक है	सार्थक है
सामान्य वर्ग	144.37	16.29	300			

तालिका संख्या 6 में अनुसूचित जाति व सामान्य वर्ग की बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि की तुलना की गई हैं अनुसूचित जाति की बालिकाओं का मध्यमान 137.63 तथा सामान्य वर्ग की बालिकाओं का मध्यमान 144.37 है। मानक विचलन की गणना करने पर अनुसूचित जाति की बालिकाओं का मानक विचलन 19.75 हैं तथा सामान्य वर्ग की बालिकाओं का मानक विचलन 16.29 है। दोनो समूह की बालिकाओं का क्रान्तिक अनुपात मान 4.56 हैं जो कि दोनो स्तर पर सार्थक हैं अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती हैं।

अनुसूचित जाति व जनजाति के समूह की बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि की तुलना करना

तालिका सं–7

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रमाप विचलन	संख्या	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
					0.01	0.05
अनुसूचित जाति	137.63	19.75	300	2.89	सार्थक है	सार्थक है
अनुसूचित जनजाति	142.15	18.59	300			

तालिका संख्या 7 में अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि की तुलना की गई हैं अनुसूचित जाति की बालिकाओं का मध्यमान 137.63 तथा अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं का मध्यमान 142.15 है। मानक विचलन की गणना करने पर अनुसूचित जाति की बालिकाओं का मानक विचलन 19.75 हैं तथा अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं का मानक विचलन 18. 59 है। दोनो समूह की बालिकाओं का क्रान्तिक अनुपात मान 2.89 हैं जो कि दोनो स्तर पर सार्थक हैं अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती हैं।

अनुसूचित जनजाति व सामान्य वर्ग के समूह की बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि की तुलना करना

तालिका सं– 8

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रमाप विचलन	संख्या	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
					0.01	0.05
अनुसूचित जनजाति	142.15	18.59	300	1.56	सार्थक नहीं है	सार्थक नहीं है
सामान्य वर्ग	144.37	16.28	300			

तालिका संख्या 8 में अनुसूचित जनजाति व सामान्य वर्ग की बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि की तुलना की गई हैं अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं का मध्यमान 142.15 तथा सामान्य वर्ग की बालिकाओं का मध्यमान 144.37 है। मानक विचलन की गणना करने पर अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं का मानक विचलन 18.59 हैं तथा सामान्य वर्ग की बालिकाओं का मानक विचलन 16. 28 है। दोनो समूह की बालिकाओं का क्रान्तिक अनुपात मान 1.56 हैं जो कि दोनो स्तर पर सार्थक नहीं हैं। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं।

विभिन्न वर्गो की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता एवं विद्यालय संतुष्टि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक की गणना

तालिका सं– 9

समूह	संख्या	सहसम्बन्ध गुणांक
अनुसूचित जाति	300	–0.0577
अनुसूचित जनजाति	300	0.1680
सामान्य वर्ग	300	–0.099

तालिका संख्या 9 के अनुसार अनुसूचित जाति की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता एवं विद्यालय संतुष्टि मापनी के प्राप्तांको के मध्य सह–संबंध गुणांक की गणना की गई जिसके अनुसार सह–सम्बन्ध मान –0.0577 जो कि शून्य सह–सबंधं पाया गया। जिससे सिद्ध होता है कि अनुसूचित जाति की बालिकाओं की आज्ञाकारिता में वृद्धि होने से उनकी विद्यालय संतुष्टि में कमी आती है लेकिन निम्न गति से । अतः इन चरो के संबंध में परिकल्पना स्वीकृत होती है।

तालिका संख्या 9 के अनुसार अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति एवं विद्यालय संतुष्टि मापनी के प्राप्तांको के मध्य सह–संबंध गुणांक की गणना की गई जिसके अनुसार सह–सम्बन्ध मान 0.1680 जो निम्नधनात्मक सह–सबंधं पाया गया। जिससे सिद्ध होता है कि अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की आज्ञाकारिता में वृद्धि होने से विद्यालय संतुष्टि में भी वृद्धि होती है लेकिन निम्न गति से अतः इस संदर्भ में परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

तालिका संख्या 9 के अनुसार सामान्य वर्ग की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति एवं विद्यालय संतुष्टि मापनी के प्राप्तांको के मध्य सह–संबंध गुणांक की गणना की गई जिसके अनुसार सह–सम्बन्ध मान –0.099 जो कि शून्य सह–सबंधं पाया गया। जिससे सिद्ध होता है कि सामान्य वर्ग की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता एवं विद्यालय संतुष्टि के मध्य कोई संबंध नहीं पाया गया। अतः इन चरो के संबंध में परिकल्पना स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

- विभिन्न वर्गो की बालिकाओं की आज्ञाकारिता प्रवृति उच्च स्तर की है। अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की आज्ञाकारिता प्रवृति अनुसूचित जाति व सामान्य वर्ग की बालिकाओं से अधिक है जबकि सामान्य वर्ग की एवं अनुसूचित जाति की बालिकाओं की आज्ञाकारिता प्रवृति में कोई अन्तर नहीं पाया गया।
- विभिन्न वर्गो की बालिकाओं की विद्यालय सन्तुष्टि सामान्य स्तर की पायी गई। अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य वर्ग की बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि अनुसूचित जाति की बालिकाओं से अधिक हैं जबकि अनुसूचित जनजाति व सामान्य वर्ग की बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि समान है। श

शोध की उपादेयता

उक्त श्शोध राष्ट्रीय शिक्षा नीति को नई दिशा प्रदान करने में मार्ग प्रशस्त करेगा। शोध कार्य विद्यालय संतुष्टि संबंधी निष्कर्ष प्रदान कर विद्यालय के शैक्षिक वातावरण में सुधार का मार्ग प्रशस्त कर समाज को आवश्यकता आधारित विद्यालय प्रदान करने में सहयोग प्रदान करेगा। साथ ही विद्यालयों में बढ़ती हुई अनुशासन हीनता से अवगत करवाकर अभिभावकों को व विद्यालय प्रशासन को सचेत करेगा। इससे विद्यालय तथा समाज गंभीर समस्या पर विचार करने के लिए प्रवृत हो सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल सुभाश चन्द : ''अनुसूचित जाति, पिछडी जाति एवं सामान्य जाति के छात्रों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन'' भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका वर्श 21 अंक 1 जनवरी–जून 2002. पृ. सं. 71
2. अग्रवाल यश : ''अनुसूचित जातियों में साक्षरता की प्रवृतियॉ'' परिप्रेक्ष्य वर्श 1 अंक 2
3. अरविन्द आर गेसू और संजय शर्मा : ''शिक्षा, सामाजिक गतिशीलता एवं दलित अन्तसम्बन्ध की पडताल'' परिपेक्ष्य वर्श 15 अंक 1 अप्रैल 2008 नीपा नई दिल्ली
4. ऐकरा जैकब : ''शैक्षिक अवसरों की समानता भारत में अनुसूचित जातियों का दृश्टांत'' परिप्रेक्ष्य अंक 2
5. कमल और के. एल. : ''बाबा तुमने मेरा स्कूल क्यों छुडवा दिया ?'' शिविरा पत्रिका अगस्त 1990 बीकानेर
6. कुमार कृश्ण एवं गुप्ता लतिका : ''बालिका सशक्तीकरण में कमी क्या है ? शिक्षा, विमर्श, जयपुर वर्श 10 अंक 3 जून 2008
7. कुमार डॉ. सतीश : ''शैक्षिक विकास में बाधक स्कूल फोबिया'' शिविरा पत्रिका मई–जून 1998 बीकानेर.
8. कुमार कृश्ण : ''शिक्षा का उद्देश्य और आज की व्यवस्था'' भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्श 23 अंक 4 अप्रैल 2005
9. कोठारी डी. एस. : ''एजुकेशन एण्ड नेशनल डेवलपमेंट'' शिक्षा आयोग 1964–66 का प्रतिवेदन, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली
10. गुप्ता मधु : ''विभिन्न जाति वर्ग के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन'' भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका वर्श 16 अंक 2 जुलाई–दिसम्बर 1997
11. गोदारा, रतनलाल एवं कटारिया सौरभ : ''भारतीय गावों की बदलती तस्वीर'' कुरूक्षेत्र, ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली वर्श 56, अंक 3 जनवरी 2010
12. चौधरी सुजीत कुमार : ''उच्च शिक्षा में महिलाओं की स्थिति एवं व्यवसायिक भेदभाव'' परिप्रेक्ष्य, नैपा नई दिल्ली वर्श 14 अंक 3 दिसम्बर 2007
13. जैन कैलाश : ''बाल उपेक्षा एवं पलायन प्रवृति'' शिविरा पत्रिका नवम्बर 2003 बीकानेर.
14. जैन प्रदीप कुमार : ''विद्या मेघ'' मार्च 2007 प्रदीप कुमार जैन द्वारा प्रकाशित तथा विद्या प्रकाश मन्दिर लि0 प्रेस यूनिट टी. पी. नगर मेरठ
15. जेशी सी.पी. : ''प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण'' राजस्थान बोर्ड जनरल ऑफ एजुकेशन अप्रैल–सितम्बर.
16. देवपुरा प्रतापमल : ''रास्ते महिला सशक्तीकरण के'' शिविरा पत्रिका नवम्बर 2004
17. पण्डे ब्रज कुमार : ''मानव अधिकार व महिलाए, लहु लुहान लो'' समय माजरा, जयपुर वर्श 2006 अंक 59 मई 2005
18. भट्ट गदाधर : ''चुनौतियों से जूझती हमारी वर्तमान शिक्षा'' शिविरा पत्रिका वर्श 43 सितम्बर 2002.
19. भट्टाचार्य. एस. 1967 : ''ए स्टडी ऑफ स्टूडेन्ट अन्रेस्ट एज् ए साइक्लोजिकल प्रॉब्लम एट कॉलेज एण्ड यूनिवसिटी लेवल, जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड साइक्लोजी.
20. भटनागर और डॉ उशा : ''शिक्षा में परिवार तथा विद्यालय की सहभागिता'' शिक्षक संदर्शिका, रा. अ. शि. प. नई दिल्ली 2003.
21. भटनागर डा. उशा : ''परिवार तथा विद्यालय की सहभागिता'' शिक्षक संदर्शिका एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली
22. मनराल, बी. 1987 : ''इन्डिसिप्लीन इन एग्जामिनेशन अमंग द यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स, जर्नल आफॅ इंडियन साइक्लोजिकल रिव्यू, वाल्यूम 32 नं. 3
23. मल्होत्रा, पी. एल. : ''विद्यालयी शिक्षा विचार के लिए कुछ मुददे'' भारत में विद्यालय शिक्षा एन. सी. ई. आर. टी. नई दिल्ली 1986

24. मिश्रा डॉ. महेन्द्र कुमार : ''विकासात्मक मनोविज्ञान'' यूनिवर्सिटी, बुक हाउस, प्रा. लि. 2007 पृ. 40
25. मोदी विकास : ''सामाजिक परिवेश और बच्चे'' शिविरा पत्रिका नवम्बर 2004
26. ःराष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा 2005, एन. सी. ई. आर. टी. नई दिल्ली 2006
27. रस्तोगी के. जी. : ''बालक के विकास में पडोस का योगदान'' शिक्षक संदर्शिका, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
28. राष्ट्रीय सलाहकार समिति : ''शिक्षा बिना बोझ के'' मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार
29. सिंह अजय कुमार : ''वैदिक कालीन भारत में स्त्री शिक्षा'' भारतीय आधुनिक शिक्षा एन. सी. ई. आर. टी, नई दिल्ली, जनवरी–अप्रैल 2008
30. सिंह डॉ. अजीत और झा. ब्रजभूशण : ''मानवीय मूल्य एवं सदाचार'' राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका
31. सिंह एस. : ''शेडयूल कास्ट इन इण्डियाः डायमेंसन आफॅ सोशल चेंज'' ज्ञान पब्लिशिंग नई दिल्ली
32. सुराणा राजेश : ''संस्कार के सांचे में ढाले बच्चों को'' शिविरा पत्रिका प्राथमिक एवं मा. शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, वर्श 37, अंक 5
33. सोरभ सुमित : ''स्त्री एक शब्द नही है। सिर्फ ?'' पुस्तक वार्ता, मा. गा. अ. हिन्दी विश्व विद्यालय, वर्धा, अंक 19, फरवरी 2008.
34. शंभू एम. एम : ''स्टुडेन्ट अनरेस्ट इन कॉलेज एण्ड यूनिवर्सिटी इन इन्डिया 1947–1970 डिस्टंशन अबस्ट्रेंक्ट इन्टर वाल्यूम्स 33
35. शर्मा और डॉ. सतीश कुमार : ''नारी पुरूत्थान में गॉधी के विचारों का योगदान'' प्रतियोगिता दर्पण, उपकार प्रकाशन, नवम्बर 1997
36. शर्मा डॉ. के. एन. ''समाज मनोविज्ञान एवं उसके सिद्धान्त'' पृ. स. 65–66
37. शर्मा सुरेश : ''आधुनिक विद्यार्थी–उनकी समस्याए और समाधान'' राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका जनर्ल आफॅ एजुकेशन संयुक्तांक अप्रैल– सितम्बर 2005
38. श्रीमाली के. एल. : ''शिक्षा के समान अवसर की योजना'' ''भारत में विद्यालय शिक्षा वर्तमान स्थिति और भावी आवश्यकताए'' एन. सी. ई. आर. टी., नई दिल्ली, 1986
39. श्रीवास्तव, सुरेशलाल : ''विश्व मानव अधिकार और महिलाए'' विद्यालय मेघ, मेरठ, वर्श 12, अंक 113, दिसम्बर 2006,
40. श्रीवास्तव और सुरेश लाल : ''महिलाओं की अन्तराश्ट्रीय आधिकारिक प्रस्थिति एवं मानवाधिकार'' विद्या मेघ, मेरठ, मार्च 2007.